इकाई 5 प्लेटो का राजनीतिक चिंतन (Plato's Political Thought)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

5.0 उद्देश्य (Objective)
5.1 परिचय (Introduction)
5.2 संक्षिप्त जीवनी (Brief Life-Sketch)
5.3 प्लेटो की कृतियाँ और शैली (Works and Style of Plato)
5.4 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)
5.5 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

5.0 उद्देश्य (Objective)

इस अध्याय का उद्देश्य प्लेटो की पुस्तक **'रिपब्लिक'** को आधार मानकर छात्रों को प्लेटो के प्रमुख राजनीतिक विचारों से अवगत कराना है। इस अध्याय में प्लेटो की पुस्तक **'रिपब्लिक'** (Republic) में वर्णित उसके राजनीतिक विचारों पर प्रकाश डाला गया है। उसके (a) न्याय, (b) शिक्षा, (c) साम्यवाद, (d) दार्शनिक राजा, (e) आदर्श राज्य के सिद्धांतों की विशेष रूप से व्याख्या की गई है। इनके अतिरिक्त, प्लेटो के सिद्धांत में फासीवादी तत्त्वों और राजनीतिक चिंतन के इतिहास में प्लेटो के महत्त्व की भी विवेचना की गई है। परंतु प्लेटो के सिद्धांतों का विश्लेषण करने से पहले उनका जीवन-परिचय जान लेना आवश्यक है, क्योंकि उनकी जीवन की घटनाओं ने उनके सिद्धांत को काफी रूप से प्रभावित किया है।

5.1 परिचय (Introduction)

प्लेटो का जन्म 427 ई० पू० **'एथेंस'** के एक कुलीन परिवार में हुआ था। उसके पिता का नाम **अरिस्तोन** (Ariston) एवं माता का नाम **पेरिकतिओन** (Perictione) था। उसके मातृकुल का संबंध एथेंस के प्रसिद्ध कानूनवेत्ता **सोलन** (Solon) से था, तो पितृकुल की वशांवली **पोसीदन** (Posidon) नामक देवता से शुरू हुई थी।

प्लेटो के कंधे भरे हुए और चौड़े थे। इसी कारण उसके मल्ल-शिक्षक ने उसका नाम प्लेटो रख दिया, क्योंकि ''प्लेटो'' शब्द का अर्थ ही होता है 'चौड़ा चकला'।

प्लेटो उच्चकुल का, अद्वितीय सौंदर्य युक्त स्वस्थ शरीर और प्रखर बुद्धि का व्यक्ति था। प्लेटो का परिवार अनेक पीढ़ियों से राजनीति में सक्रिय था। प्रारंभ में प्लेटो की इच्छा भी राजनेता बनने की थी। परंतु उसके भाग्य में कुछ और ही लिखा था। जिस 'एथेंस' में प्लेटो का जन्म हुआ था, वह उस समय यूनान का सबसे महान 'नगर राज्य' था। परंतु जैसे-जैसे प्लेटो की आयु बढ़ती गई, उसने **'एथेंस'** को 'स्पार्टा' के साथ तीस वर्षों तक (430-400 ई० पू०) पेलोपोनेसिया (Peloponesia) के युद्ध में लड़ते हुए; हार खाते हुए; प्रजातंत्र को अपने चरमोत्कर्ष से सर्वनाश की ओर गिरते हुए और गुणों के खान 'एथेंस' को गुणविहीन होते हुए देखा। युद्ध में 'एथेंस' की हार होने पर वहाँ के प्रजातंत्र की कमर ही टूट गई। 404 ई० पू० में **एथेंस** में क्रांति हुई। प्रजातंत्र

(Protagoras) जो ज्ञान को गुण बतलाती है, **सिंपोजियम** (Symposium) जो कला, सौंदर्य और प्रेम पर प्रकाश डालती है, **फेडो** (Phaedo) जो अमरत्व से संबंधित है, **फेड्रस** (Phaedrus) जो भाषण कला पर एक ग्रंथ है, **रिपब्लिक** (Republic) जो न्याय और **प्लेटो** के अन्य प्रमुख राजनीतिक विचारों की विवेचना करती है, आदि कृतियाँ हैं। ये सब कृतियाँ प्लेटो की चरमोत्कृष्ट साहित्यिक और दार्शनिक प्रतिभा को प्रतिबिंबित करती है।

तीसरे वर्ग में वे कृतियाँ आती हैं जिनका संबंध द्वंद्वात्मक पद्धति या डायलेक्टिक (Dialectic) से है। उनमें प्रमुख हैं : **पार्मिनीडिज** (Parmenides) जो एक और अनेक (the one and the many) के संबंध पर प्रकाश डालती है, **थीटिटस** (Theaetetus) जो ज्ञान मीमांसा (Epistemology) से संबंधित है, **सोफिस्ट** (Sophist) जो तर्कशास्त्र संबंधी ग्रंथ है और **स्टेट्समैन** (Statesman) जो **पोलिटिकस** (Politicus) भी कहलाती है।

चौथे और अंतिम वर्ग में वे कृतियाँ आती हैं जो आंशिक रूप से ही नाटकीय और संवाद शैली को व्यक्त करती है। उन कृतियों में **फीलीबस** (Philebus) जो आचारशास्त्र के विषय में है, **टायमीयस** (Timaeus) जिसका संबंध विश्वज्ञान (cosmology) से है और लॉज (Laws) प्रमुख है।

लॉज **प्लेटो** की अंतिम प्रसिद्ध पुस्तक है जो उसने अपनी वृद्धावस्था में लिखी, परंतु इसका प्रकाशन उसकी मृत्यु के एक वर्ष बाद हुआ। इस पुस्तक में **प्लेटो** ने आदर्श की जगह वास्तविकता पर अधिक जोर दिया है। संभवतः यह पुस्तक प्लेटो के **सिराक्यूज** के कटु व्यावहारिक अनुभव पर आधारित है।

(iii) शैली (Style)

प्लेटो ने अपनी पुस्तक 'रिपब्लिक' और अन्य रचनाओं में जो शैली अपनाई है, वह अत्यंत रोचक, सशक्त और आकर्षक है। उसकी रचनाओं में सिर्फ एक पात्र का दूसरे पात्र के साथ वार्तालाप ही नहीं होता है; बल्कि दर्शन कविता के साथ, नैतिकता, वास्तविकता के साथ, सुख दुख के साथ, ज्ञान अज्ञान के साथ, प्रकाश अंधकार के साथ, व्यायाम संगीत के साथ, संगीत गणित के साथ और गणित डायलेक्टिक के साथ स्वर में स्वर मिलाकर बोलते हुए प्रतीत होते हैं। इसके चलते जहाँ प्लेटो को समझना कुछ कठिन हो जाता है, वहाँ उसकी कृतियों को पढ़ने से मन आनंदित हो जाता है। इसीलिए तो **क्रॉसमैन** ने लिखा है, "मैं जितना अधिक रिपब्लिक को पढ़ता हूँ, उतना ही अधिक इससे घृणा करता हूँ, फिर भी इसे बार-बार पढ़े बिना अपने को रोक नहीं सकता हूँ।" ("The more I read it (**Republic**), the more I hate it; and yet I cannot help returning to it time after time." Crossman, **Plato Today**, 2nd Edn. (London : Allen and Unwin Ltd., 1959, p. 172)

वस्तुतः प्लेटो ने अपने गूढ़ दार्शनिक तथ्यों को ऐसे नाटकीय और सजीव रूप से उपस्थित किया है कि उनमें उपन्यास की रोचकता आ जाती है एवं उसका गद्य पद्य से भी अधिक सरस और प्रभावशाली हो जाता है। प्राकृतिक जगत के दृष्टांतों एवं पौराणिक कथाओं का समावेश कर प्लेटो ने अपनी रचनाओं को मनोरंजक बना दिया है।

प्लेटो के बाद और पूर्व कभी भी दर्शनशास्त्र उतने भव्य रूप में प्रकट नहीं हो पाया जितने भव्य रूप में **प्लेटो** ने उसे प्रकट किया है। प्लेटो ज्ञानी भी था और कलाकार भी। दार्शनिक और कलाकार दोनों ही उसके व्यक्तित्व में समान रूप से समाए हुए थे। अतः उसने एक ऐसी शैली अपनाई जिसमें दर्शन, कविता की भाषा

बिना इसमें कोई प्रवेश नहीं कर सकता है'' ("No one without a knowledge of mathematics may enter here")।

प्लेटो अपने इस अकादमी के द्वारा एक ऐसे दार्शनिक शासक को उत्पन्न करना चाहता था, जो राज्य को बुराइयों से मुक्त कर सके और पूर्ण शिक्षित एवं ज्ञानी होकर जनता की सेवा कर सके। यद्यपि प्लेटो अपने इस उद्देश्य को पाने में सफल न हो सका, तथापि उसने ज्ञान की एक नई जयोति जगाई। युद्ध में परास्त होने के बाद **एथेंस** का राजनीतिक गौरव तो समाप्त हो गया था, परंतु अकादमी की स्थापना के बाद वह समस्त यूनान का बौद्धिक केंद्र बन गया।

दियोनिसियस प्रथम की मृत्यु के बाद **दियोन** ने पुनः **प्लेटो** को '*सिराक्यूज*' आने का निमंत्रण दिया। तीस वर्षीय दियोनिसियस द्वितीय, जो कि पिता की मृत्यु के बाद राजा बना, ने प्लेटो को गुरु के रूप में स्वीकार कर लिया। परंतु वह चंचल स्वभाव का था। शीघ्र ही प्लेटो की शिक्षा उसे बोझिल लगने लगी। चाटुकारों ने भी उसका कान भरना शुरु किया कि दिओन उसे **'दार्शनिक शासक'** बनाने के बहाने स्वयं शासक बनना चाहता है। इसलिए उसने दिओन को निर्वासित कर दिया, उसकी संपत्ति जब्त कर ली और उसकी पत्नी का विवाह दूसरे पुरुष के साथ कर दिया। निराश होकर **प्लेटो** को एथेंस लौटाना पड़ा।

इस घटना के छह वर्ष बाद पुनः **दियोनिसियस द्वितीय** ने स्वयं **प्लेटो** को सिराक्यूज आने का आग्रह किया और उसे आश्वासन दिया कि वह उसके उपदेशों का पालन करेगा। दिओन अभी तक निर्वासित था। प्रारंभिक हिचकिचाहट के बाद प्लेटो फिर वहाँ गया। वहाँ जाकर उसने राजा को दिओन के साथ किए गए अन्याय को दूर करने को कहा। फलस्वरूप दोनों में इतनी शत्रुता हो गई कि किसी तरह अपनी जान बचाकर प्लेटो एथेंस लौट आया।

81 वर्ष (347 ई० पू०) की आयु में प्लेटो अपने किसी शिष्य के आग्रह पर रात को एक विवाह समारोह में गया। वैवाहिक वातावरण के कोलाहल से परेशान होकर वह विश्राम और सोने के लिए एक शांत कमरे में चला गया। सुबह सबेरे विवाह समाप्ति के बाद जब वर-वधू ने गुरु से आशीर्वाद लेने के लिए प्लेटो के कमरे में प्रवेश किया, तो प्लेटो चिरनिद्रा में विलीन हो गया था। इस प्रकार दार्शनिकों का राजा और राजाओं को दार्शनिक बनाने वाला मृत्यु की **रिपब्लिक** में प्रस्थान कर गया।

5.3 प्लेटो की कृतियाँ और शैली (Works and Style of Plato)

काल की दृष्टि से प्लेटो की समस्त रचनाओं को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम वर्ग में वे प्रारंभिक कृतियाँ आती हैं, जो सुकरात से संबंधित हैं, सिर्फ इसलिए नहीं कि उसमें सुकरात मुख्य पात्र है, बल्कि इसलिए भी कि उनके विषय और विचार **ऐतिहासिक सुकरात** के विचारों को ही अभिव्यक्त करते हैं। **एपोलोजी** (Apology), **क्रीटो** (Crito) और **यूथीफ्रो** (Euthyphro) की रचनाएँ इसी कोटि में आती हैं। ये सभी रचनाएँ सुकरात की मृत्यु से संबंधित हैं। अकादमी की स्थापना के शीघ्र बाद **प्लेटो** ने 'जोर्जियस' (Gorgias) की रचना की।

द्वितीय वर्ग की कृतियों की रचना प्लेटो ने संभवतः 380 ई० पू० में की। इन रचनाओं में प्लेटो ने अपने सिद्धांतों को प्रतिपादित किया है। इस वर्ग में **'मीनो'** (Meno) जो शिक्षा पर एक पुस्तक है, **प्रोटागोरस**

के स्थान पर 'तीस व्यक्तियों का शासन' स्थापित हुआ। प्लेटो को भी शासन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। परंतु तीस व्यक्तियों के शासन के क्रूर, हिंसक और दमनपूर्ण क्रियाकलापों को देखकर प्लेटो ने उस शासन में भाग नहीं लिया। उसे राजनीति से विरक्ति हो गई। शीघ्र ही एक दूसरी क्रांति के द्वारा 'तीस व्यक्तियों के शासन' को समाप्त कर पुनः प्रजातंत्र की स्थापना की गई। शुरु में प्लेटो ने तो इस शासन का स्वागत किया, परंतु बाद में इसके कुकृत्यों से ऊबकर उसने राजनीति से सन्यास ले लिया। इसी शासन-व्यवस्था ने सुकरात को प्राणदंड की सजा दी थी और इस घटना का प्लेटो के कोमल मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसे प्रजातंत्र और राजनीति दोनों से घृणा हो गई।

लगभग 18-20 वर्ष की आयु में **प्लेटो, सुकरात** के संपर्क में आया। **प्लेटो** और **सुकरात** के व्यक्तित्व में आकाश-पाताल का अंतर था। **सुकरात** कुरूप था जबकि **प्लेटो** सुंदर; **सुकरात** शिल्पकार का पुत्र था जबकि **प्लेटो** कुलीन वर्ग का; **सुकरात** प्रवीण वक्ता था जबकि **प्लेटो** लेखक; **सुकरात** हँसोड़ था जबकि **प्लेटो** गंभीर; **सुकरात** अपने को एक साधारण अज्ञानी व्यक्ति मानता था जबकि **प्लेटो** विद्वान और ज्ञानी; **सुकरात** जीवन का प्रतिरूप था जबकि **प्लेटो** जीवन को दूर से देखने वाला दर्शक।

इन अंतरों के बावजूद **प्लेटो** के विचारों पर **सुकरात** का काफी प्रभाव पड़ा। सुकरात के विचारों से प्रभावित होकर ही **प्लेटो** ने राजनीति की नैतिक व्याख्या की, गुण को ज्ञान माना, शासन को कला कहा, विवेक पर बल दिया और सोद्देश्यता सिद्धांत (Teleological principle) द्वारा ब्रह्मांड की व्याख्या की। सुकरात की मृत्यु से उसे इतना गहरा आघात पहुँचा कि उसने यह उद्घोषणा की कि "मूर्खों के हाथ में सत्ता जहर बन जाती है और जबतक दार्शनिक शासक नहीं होंगे तबतक जनता का कल्याण संभव नहीं है।"

सुकरात की मृत्यु से विक्षुब्ध होकर **प्लेटो** ने एथेंस छोड़ दिया और निकटवर्ती नगर राज्यों में भ्रमण करना शुरु किया। वह बारह वर्षों तक (28 से 40 वर्ष की उम्र तक) मिश्र, इटली, सिसली और अन्य देशों में घूमता रहा। मिश्र के भ्रमण से उसे श्रम-विभाजन (Division of Labour) सिद्धांत का ज्ञान हुआ जिसे उसने अपनी पुस्तक **रिपब्लिक** में प्रतिपादित किया है।

इटली ओर **सिसली** की यात्रा से उसे पिथागोरस (Pythagoras) के सिद्धांत से परिचय हुआ। **पिथागोरस** के प्रभाव के कारण हीं प्लेटो के सिद्धांत में धार्मिक प्रवृत्ति, पुरोहितीय ध्वनि और गणित के प्रति गहरी निष्ठा का आभास होता है।

इसी यात्रा के दौरान **'सिराक्यूज'** में उसकी भेंट 'दियोन' (Dion) से हुई। वह बड़ा ही सुसंस्कृत व्यक्ति था। वह **दियोनिसियस प्रथम** नामक निरंकुश शासक का **दामाद** था। **दियोन** के आग्रह पर **प्लेटो** ने उसके ससुर को पढ़ाना शुरु किया। पढ़ाई के क्रम में **प्लेटो** ने दियोनिसियस को निरंकुश शासक के अवगुणों का भी बखान किया। इससे **दियोनिसियस** काफी क्रोधित हुआ। उसने प्लेटो को स्पार्टा के राजदूत के हाथों सुपुर्द कर दिया, जिसने उसे एक दास के रूप में बेच दिया। सौभाग्य से **प्लेटो** की भेंट अपने एक पुराने मित्र से हुई जिसने उसे गुलामी से मुक्त करवाकर एथेंस भेजवा दिया।

एथेंस लौटने पर **प्लेटो** ने नगर के बाहर प्रकृति की गोद में कुंजों से घिरे हुए एक स्थल पर एक अकादमी (Academy) की स्थापना की। उसके प्रवेश द्वार पर यह लिख दिया गया कि "गणित के ज्ञान के

में गुंजायमान होता है, सत्य सौंदर्य के आभूषण से अलंकृत है और तर्क संगीत के स्वर में बोलता है। यही कारण है कि प्लेटो की शैली चमकती, जगमगाती और थिरकती हुई प्रतीत होती है।

5.4 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1. प्लेटो के जीवन परिचय एवं प्रमुख कृतियों का विवेचन कीजिए।
   (Dicuss the life history and important works of Plato)

5.5 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

1. G. S. Sabine : A History of Political Theory
2. W. A. Dunning : A History of Political Theory (Vol. I)
3. C. L. Wayper : Political Thought

❐ ❐